रुद्राष्टकम् (नमामीशमीशान निर्वाणरूपं) अर्थ सहित: पूरा पाठ और हिंदी अर्थ | तुलसीदास

26 नवंबर 2026 • पढ़ने में 10 मिनट स्तोत्र शिव भक्ति

रुद्राष्टकम् गोस्वामी तुलसीदास जी के **श्रीरामचरितमानस (उत्तरकांड)** में आता है। यहाँ **रुद्राष्टकम् अर्थ सहित** पढ़िए: पूरा पाठ और हर श्लोक का सरल हिंदी अर्थ। कथा में काकभुशुंडि जी के गुरु, एक ब्राह्मण, शिव जी को प्रसन्न करने के लिए यह स्तुति गाते हैं। "न जानामि योगं जपं नैव पूजां": मैं न योग जानता हूँ, न जप, न पूजा। यही इसकी सबसे बड़ी सुंदरता है: यह साधारण भक्त की प्रार्थना है।



कैलाश पर शिव परिवार, 18वीं शताब्दी की चित्रकला (public domain, Wikimedia Commons)

रुद्राष्टकम्: पूरा पाठ (8 लिपियों में)

देवनागरी | English | বাংলা | ଓଡ଼ିଆ | తెలుగు | ಕನ್ನಡ | മലയാളം | தமிழ்

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥ १ ॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकाल कालं कृपालं
गुणागार संसारपारं नतोऽहम् ॥ २ ॥

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरम् ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा
लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजंगा ॥ ३ ॥

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं

प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥ ४ ॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं
अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ।
त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपाणिं
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥ ५ ॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानन्दसंदोह मोहापहारी
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥ ६ ॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥ ७ ॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥ ८ ॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

लिपि बदलने से शब्द नहीं बदलते: वही संस्कृत पाठ, आपकी लिपि में (अक्षर-से-अक्षर रूपांतरण)। तमिल में छोटे अंक संस्कृत ध्वनियाँ दिखाते हैं। 🔊 आवाज़ आपके फ़ोन/कंप्यूटर की अपनी मशीन-आवाज़ है; सही उच्चारण के लिए हमारे वीडियो सुनें।

🔊 सुनें (पंक्ति-दर-पंक्ति) ■ रोकें गति सामान्य

श्लोक और हिंदी अर्थ

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥ १ ॥

अर्थ (1): हे ईशान, आप मोक्ष स्वरूप, सर्वसमर्थ, सब जगह व्याप्त, ब्रह्म और वेद स्वरूप हैं, आपको नमन। अपने स्वरूप में स्थित, गुणों से परे, विकल्प-रहित, इच्छा-रहित, चेतन आकाश रूप और आकाश को ही वस्त्र बनाने वाले आपको मैं भजता हूँ।

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकाल कालं कृपालं
गुणागार संसारपारं नतोऽहम् ॥ २ ॥

अर्थ (2): आप निराकार, ओंकार के मूल, तीनों अवस्थाओं से परे (तुरीय), वाणी, ज्ञान और इंद्रियों की पहुँच से परे, कैलाशपति हैं। विकराल, महाकाल के भी काल, कृपालु, गुणों के धाम और संसार से पार ले जाने वाले आपको मैं नमन करता हूँ।

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं

मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरम् ।

स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा

लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजंगा ॥ ३ ॥

अर्थ (3): हिमालय जैसे गौर और गंभीर, करोड़ों कामदेवों जैसी शोभा वाले शरीर वाले; जिनके सिर पर सुंदर गंगा लहराती है, ललाट पर बाल चंद्रमा चमकता है और गले में सर्प हैं।

चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं

प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।

मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं

प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥ ४ ॥

अर्थ (4): कानों में हिलते कुंडल, सुंदर भौंहें और बड़े नेत्र, प्रसन्न मुख, नीलकंठ और दयालु; सिंह की खाल का वस्त्र और मुंडमाला धारण करने वाले, सबके प्रिय, सबके स्वामी शंकर को मैं भजता हूँ।

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं

अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ।

त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपाणिं

भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥ ५ ॥

अर्थ (5): प्रचंड, श्रेष्ठ, तेजस्वी, परमेश्वर, अखंड, अजन्मा, करोड़ों सूर्यों जैसे प्रकाशमान; तीनों प्रकार के दुखों (शूल) को जड़ से मिटाने वाले, हाथ में त्रिशूल धारण करने वाले, भाव से प्राप्त होने वाले भवानीपति को मैं भजता हूँ।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी

सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।

चिदानन्दसंदोह मोहापहारी

प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥ ६ ॥

अर्थ (6): हे कलाओं से परे, कल्याण स्वरूप, कल्प का अंत करने वाले, सज्जनों को सदा आनंद देने वाले त्रिपुरारी, चेतना और आनंद के भंडार, मोह को हरने वाले, कामदेव के शत्रु प्रभु: प्रसन्न होइए, प्रसन्न होइए।

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं

भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।

न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं

प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ॥ ७ ॥

अर्थ (7): हे उमापति, जब तक मनुष्य इस लोक या परलोक में आपके चरण-कमलों को नहीं भजते, तब तक उन्हें न सुख मिलता है, न शांति, न दुखों से मुक्ति। हे सब प्राणियों में बसने वाले प्रभु, प्रसन्न होइए।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां

नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।

जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं

प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ॥ ८ ॥

अर्थ (8): मैं न योग जानता हूँ, न जप, न पूजा; हे शंभु, मैं सदा-सर्वदा आपको ही नमन करता हूँ। बुढ़ापा, जन्म और दुखों के समूह से तपते हुए मुझ शरणागत की रक्षा कीजिए, हे ईश्वर शंभु।

> रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
>
> ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

अर्थ (9): (फलश्रुति) यह रुद्राष्टक एक ब्राह्मण ने भगवान हर (शिव) को प्रसन्न करने के लिए कहा। जो मनुष्य इसे भक्ति से पढ़ते हैं, उन पर शंभु प्रसन्न होते हैं।

पाठ कैसे करें

- सुबह या संध्या, शिवलिंग पर जल चढ़ाने के बाद।
- श्रावण मास, सोमवार और प्रदोष पर विशेष रूप से।
- अर्थ समझकर, धीरे-धीरे। आठवाँ श्लोक (न जानामि योगं...) मन से बोलें: यही पूरी स्तुति का सार है।

🎧 मन को शांत करने के लिए अपनी आवाज़ में: ॐ नमः शिवाय 1008 बार, गिनती के साथ

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

रुद्राष्टकम् किसने लिखा?
गोस्वामी तुलसीदास जी ने; यह श्रीरामचरितमानस के उत्तरकांड में है।

रुद्राष्टकम् में कितने श्लोक हैं?
आठ श्लोक (इसीलिए अष्टकम्), और अंत में एक फलश्रुति।

"त्रयःशूल" का अर्थ क्या है?
तीन प्रकार के दुख: शारीरिक, मानसिक और दैवी (आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक)।

🔱 कथा, जाप और स्तोत्र अपनी आवाज़ में: शिव कैलाशा YouTube चैनल
रोज़ एक कथा या जाप WhatsApp पर: शिव कैलाशा WhatsApp चैनल से जुड़ें